IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2026
Impact Factor: 8.2

आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों की भूमिका एवं उनके आपसी संबंधों का विश्लेषण

अभय कुमार[1] and डॉ. जयवीर सिंह[2]
[1]शोधार्थी, इतिहास-विभाग
[2]प्रोफेसर, इतिहास-विभाग
विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर, म.प्र., भारत

सारांश: *आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन भारतीय समाज, राजनीति और सांस्कृतिक विकास को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। इतिहास केवल अतीत की घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण नहीं है, बल्कि यह इस बात को भी प्रभावित करता है कि समाज अपने अतीत को किस प्रकार समझता और उसकी व्याख्या करता है। आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों का विकास विशेष रूप से औपनिवेशिक काल से जुड़ा हुआ दिखाई देता है।*

औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा भारतीय समाज को विभिन्न धार्मिक और सामाजिक समुदायों में वर्गीकृत करने की प्रक्रिया ने इतिहास की व्याख्या को भी प्रभावित किया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय अतीत को कभी हिन्दू और मुस्लिम शासन के पृथक चरणों के रूप में प्रस्तुत किया गया, तो कभी धार्मिक पहचान को राजनीतिक संघर्ष का प्रमुख आधार बनाया गया। साम्प्रदायिक इतिहास लेखन ने मध्यकालीन भारत की घटनाओं, शासकों, धार्मिक नीतियों, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं की व्याख्या में चयनात्मक दृष्टिकोण अपनाया।

मुख्य शब्द: आधुनिक भारतीय इतिहास, इतिहास लेखन, साम्प्रदायिकता, औपनिवेशिक इतिहास लेखन, राष्ट्रवाद, हिन्दू-मुस्लिम संबंध, इतिहास की व्याख्या, राजनीतिक पहचान।

I. परिचय

भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा अत्यंत व्यापक और बहुआयामी रही है। प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत में इतिहास का लेखन धार्मिक ग्रंथों, राजकीय अभिलेखों, यात्रावृत्तांतों, वंशावलियों, साहित्यिक रचनाओं और प्रशासनिक दस्तावेजों के माध्यम से हुआ। आधुनिक काल में यूरोपीय इतिहास लेखन की पद्धतियों के प्रभाव से भारतीय अतीत को नए ढंग से वर्गीकृत और व्यवस्थित किया गया। औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय समाज के अध्ययन के लिए जनगणना, सर्वेक्षण, प्रशासनिक रिपोर्ट और ऐतिहासिक ग्रंथों का व्यापक उपयोग किया गया। इसी प्रक्रिया में धर्म आधारित सामाजिक वर्गीकरण को विशेष महत्व मिला। इतिहास की व्याख्या में हिन्दू और मुस्लिम समुदायों को अलग-अलग राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाइयों के रूप में देखने की प्रवृत्ति धीरे-धीरे मजबूत हुई।

इससे भारतीय इतिहास में धार्मिक पहचान और राजनीतिक सत्ता के संबंध को अत्यधिक महत्व दिया गया। साम्प्रदायिक इतिहास लेखन की सबसे प्रमुख विशेषता यह रही कि उसने जटिल ऐतिहासिक प्रक्रियाओं को अक्सर धार्मिक संघर्ष के सरल ढाँचे में प्रस्तुत किया। इस दृष्टिकोण में मध्यकालीन भारत को हिन्दू और मुस्लिम संघर्ष के काल के रूप में तथा आधुनिक काल को साम्प्रदायिक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के विस्तार के रूप में देखने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। हालांकि आधुनिक इतिहासकारों ने इस दृष्टिकोण की आलोचना करते हुए यह बताया कि भारतीय समाज में धार्मिक समुदायों के बीच संघर्ष के साथ-साथ सहयोग, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक सह-अस्तित्व और आर्थिक परस्पर निर्भरता भी मौजूद थी।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

II. औपनिवेशिक इतिहास लेखन और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण

आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों के विकास को समझने के लिए औपनिवेशिक इतिहास लेखन का अध्ययन आवश्यक है। औपनिवेशिक इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को विभिन्न कालखंडों में बाँटने के लिए धार्मिक पहचान को महत्वपूर्ण आधार बनाया। विशेष रूप से प्रारंभिक औपनिवेशिक इतिहास लेखन में प्राचीन भारत को हिन्दू काल, मध्यकालीन भारत को मुस्लिम काल तथा आधुनिक भारत को ब्रिटिश काल के रूप में देखने की प्रवृत्ति विकसित हुई। इस प्रकार की काल-विभाजन पद्धति ने यह धारणा मजबूत की कि भारतीय इतिहास मूल रूप से अलग-अलग धार्मिक समुदायों के शासन और संघर्ष की कहानी है। औपनिवेशिक प्रशासन के लिए ऐसी व्याख्या राजनीतिक रूप से भी उपयोगी थी क्योंकि इससे भारतीय समाज को आंतरिक रूप से विभाजित और परस्पर विरोधी समूहों में प्रस्तुत किया जा सकता था। इतिहास लेखन और प्रशासनिक वर्गीकरण के बीच इस प्रकार का संबंध आगे चलकर साम्प्रदायिक राजनीति के विकास में सहायक बना। जनगणना और प्रशासनिक दस्तावेजों में धार्मिक समुदायों की पृथक पहचान ने सामाजिक पहचान को अधिक राजनीतिक स्वरूप प्रदान किया। परिणामस्वरूप धार्मिक समुदायों की संख्या, सामाजिक स्थिति और राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे प्रश्न सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनने लगे।

III. साम्प्रदायिक इतिहास लेखन की प्रमुख विशेषताएँ

साम्प्रदायिक इतिहास लेखन में सामान्यतः इतिहास को धार्मिक समुदायों के दृष्टिकोण से समझने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इसमें किसी विशेष समुदाय को ऐतिहासिक रूप से पीड़ित, विजेता, शासक अथवा संघर्षरत समूह के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार के इतिहास लेखन में घटनाओं के चयन और व्याख्या में पूर्वाग्रह की संभावना अधिक रहती है। उदाहरण के लिए किसी शासक की धार्मिक नीति को उसके प्रशासनिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भों से अलग करके केवल धार्मिक दृष्टिकोण से समझना इतिहास की जटिलता को कम कर देता है। इसी प्रकार मंदिरों, मस्जिदों, धार्मिक संस्थाओं अथवा धार्मिक संघर्षों से संबंधित घटनाओं को व्यापक सामाजिक संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत करने पर अतीत की एकपक्षीय छवि निर्मित हो सकती है। साम्प्रदायिक इतिहास लेखन में प्रतीकों, ऐतिहासिक नायकों और ऐतिहासिक स्मृतियों का भी विशेष महत्व होता है। अतीत के शासकों और घटनाओं को वर्तमान राजनीतिक पहचान के संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित किया जा सकता है। इससे इतिहास अकादमिक अध्ययन से आगे बढ़कर राजनीतिक और सामाजिक लामबंदी का साधन बन जाता है।

IV. राष्ट्रवादी इतिहास लेखन और साम्प्रदायिक प्रवृत्तियाँ

राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने औपनिवेशिक इतिहास की अनेक धारणाओं को चुनौती दी। भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने भारतीय सभ्यता की निरंतरता, सांस्कृतिक एकता और औपनिवेशिक शोषण को सामने लाने का प्रयास किया। हालांकि राष्ट्रवादी इतिहास लेखन एक समान प्रवृत्ति नहीं था। इसके कुछ रूपों ने भारतीय राष्ट्रवाद को व्यापक और समावेशी आधार पर प्रस्तुत किया, जबकि कुछ व्याख्याओं में प्राचीन भारतीय गौरव को विशेष महत्व दिया गया और धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्र की अवधारणा से जोड़ा गया। इसी कारण राष्ट्रवादी इतिहास लेखन और साम्प्रदायिक इतिहास लेखन के बीच संबंध जटिल रहा। एक ओर राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने औपनिवेशिक 'विभाजनकारी' दृष्टिकोण का विरोध किया, वहीं दूसरी ओर कुछ राष्ट्रवादी आख्यानों में अतीत की सांस्कृतिक पहचान को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया जिससे बाद में साम्प्रदायिक व्याख्याओं को आधार मिल सका। इसलिए राष्ट्रवादी इतिहास लेखन का मूल्यांकन उसके विशिष्ट लेखकों, समय और राजनीतिक संदर्भ के आधार पर करना आवश्यक है।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन और साम्प्रदायिकता की आलोचना

मार्क्सवादी इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास की व्याख्या में वर्ग, उत्पादन संबंध, आर्थिक संरचना, सामाजिक संघर्ष और राजनीतिक सत्ता जैसे तत्वों को महत्वपूर्ण माना। इस दृष्टिकोण ने धार्मिक संघर्ष को इतिहास की एकमात्र व्याख्या मानने का विरोध किया। मध्यकालीन भारत के संदर्भ में मार्क्सवादी इतिहासकारों ने यह दिखाने का प्रयास किया कि राज्य की नीतियाँ केवल धार्मिक उद्देश्यों से निर्धारित नहीं होती थीं, बल्कि राजनीतिक सत्ता, राजस्व, क्षेत्रीय नियंत्रण और सामाजिक संबंधों का भी महत्वपूर्ण प्रभाव था। इस दृष्टिकोण ने साम्प्रदायिक इतिहास लेखन के उस आधार को चुनौती दी जिसमें हिन्दू और मुस्लिम समुदायों को स्थायी रूप से परस्पर विरोधी इकाइयों के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। हालांकि मार्क्सवादी इतिहास लेखन की भी आलोचना हुई कि उसने कुछ अवसरों

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, June 2026 Impact Factor: 8.2

पर सांस्कृतिक और धार्मिक अनुभवों को आर्थिक संरचना के संदर्भ में अत्यधिक सीमित कर दिया। इसके बावजूद साम्प्रदायिकता के अध्ययन में वर्ग, सत्ता और आर्थिक हितों को शामिल करने में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण रही।

V. सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की भूमिका

सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास ने साम्प्रदायिक संबंधों को समझने के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण विकसित किया। इस दृष्टिकोण में केवल शासकों और युद्धों के स्थान पर सामान्य लोगों, स्थानीय समुदायों, व्यापारियों, किसानों, कारीगरों, धार्मिक संस्थाओं, साहित्य, लोक परंपराओं और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का अध्ययन किया गया। इससे यह समझने में सहायता मिली कि हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच संबंध केवल संघर्ष पर आधारित नहीं थे। दैनिक जीवन में भाषा, भोजन, संगीत, वस्त्र, कला, स्थापत्य और स्थानीय परंपराओं के स्तर पर व्यापक सांस्कृतिक संपर्क दिखाई देता है। भक्ति और सूफी परंपराओं ने भी विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच संवाद के अवसर पैदा किए। इस प्रकार सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास ने साम्प्रदायिक इतिहास लेखन द्वारा निर्मित कठोर धार्मिक विभाजनों को अधिक जटिल और ऐतिहासिक संदर्भ में समझने की संभावना प्रदान की।

इतिहास लेखन और साम्प्रदायिक राजनीति का आपसी संबंध

इतिहास और राजनीति के बीच संबंध आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। राजनीतिक आंदोलनों ने अतीत की कुछ घटनाओं को विशेष महत्व दिया और उन्हें सामूहिक पहचान के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया। दूसरी ओर ऐतिहासिक आख्यानों ने राजनीतिक पहचान के निर्माण में योगदान दिया। जब किसी समुदाय को उसके अतीत की विशिष्ट घटनाओं, नायकों और पीड़ाओं से लगातार जोड़ा जाता है, तो ऐतिहासिक स्मृति राजनीतिक चेतना का हिस्सा बन जाती है। साम्प्रदायिक राजनीति में इतिहास का उपयोग अक्सर वर्तमान राजनीतिक दावों को वैधता प्रदान करने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में इतिहास की जटिलता कम होकर भावनात्मक और द्विआधारी आख्यानों में परिवर्तित हो सकती है। इसलिए इतिहासकारों के लिए यह आवश्यक है कि वे ऐतिहासिक स्रोतों की आलोचनात्मक जाँच करें और अतीत को वर्तमान राजनीतिक हितों के अनुरूप सरल बनाने से बचें।

VI. साम्प्रदायिक इतिहास लेखन के आपसी संबंध

आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में विभिन्न साम्प्रदायिक प्रवृत्तियाँ एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं रहीं। औपनिवेशिक वर्गीकरण ने धार्मिक समुदायों की पृथक पहचान को मजबूत किया, जिसे आगे चलकर राजनीतिक संगठनों और सामुदायिक आंदोलनों ने अपने-अपने उद्देश्यों के अनुरूप अपनाया। इसके प्रत्युत्तर में राष्ट्रवादी इतिहास लेखन ने राष्ट्रीय एकता का आख्यान प्रस्तुत किया, जबकि मार्क्सवादी और सामाजिक इतिहासकारों ने आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों को अधिक महत्व दिया। इस प्रकार इतिहास लेखन की विभिन्न धाराओं के बीच निरंतर बहस विकसित हुई। साम्प्रदायिक इतिहास लेखन और उसके आलोचनात्मक इतिहास लेखन के बीच संबंध को संघर्ष, प्रत्युत्तर और पुनर्व्याख्या की प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है। प्रत्येक नई इतिहास-दृष्टि ने पूर्ववर्ती दृष्टिकोण की सीमाओं को चुनौती देते हुए इतिहास की नई व्याख्या प्रस्तुत की।

VII. आधुनिक इतिहास लेखन में स्रोत और वस्तुनिष्ठता

साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों के अध्ययन में स्रोतों की प्रकृति और उनका आलोचनात्मक उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक स्रोत स्वयं हमेशा निष्पक्ष नहीं होते। राजकीय दस्तावेज, धार्मिक साहित्य, यात्रावृत्तांत, औपनिवेशिक रिपोर्ट और साहित्यिक रचनाएँ अपने-अपने संदर्भ और उद्देश्यों से प्रभावित हो सकती हैं। इसलिए किसी एक स्रोत के आधार पर व्यापक ऐतिहासिक निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। इतिहासकार को विभिन्न प्रकार के स्रोतों की तुलना करनी चाहिए और उनके निर्माण की परिस्थितियों को समझना चाहिए। विशेष रूप से साम्प्रदायिक इतिहास लेखन में चयनात्मक स्रोत-उपयोग की संभावना अधिक होती है। वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन का अर्थ यह नहीं कि इतिहासकार के पास कोई दृष्टिकोण न हो, बल्कि यह है कि उसके निष्कर्ष प्रमाण, संदर्भ और आलोचनात्मक विश्लेषण पर आधारित हों।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, June 2026
Impact Factor: 8.2

VIII. निष्कर्ष

आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों की भूमिका को भारतीय सामाजिक और राजनीतिक इतिहास से अलग करके नहीं समझा जा सकता। औपनिवेशिक शासन द्वारा विकसित धार्मिक वर्गीकरण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व की प्रक्रियाएँ, सामाजिक प्रतिस्पर्धा, राष्ट्रवादी आंदोलनों और आधुनिक साम्प्रदायिक राजनीति ने इतिहास की व्याख्या को विभिन्न रूपों में प्रभावित किया। साम्प्रदायिक इतिहास लेखन ने भारतीय अतीत को प्रायः धार्मिक संघर्ष की दृष्टि से प्रस्तुत किया, जबकि बाद की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और उपेक्षित समूहों पर केंद्रित इतिहास-दृष्टियों ने इस सरलीकरण को चुनौती दी। इतिहास लेखन की विभिन्न धाराओं के आपसी संबंधों से स्पष्ट होता है कि इतिहास केवल अतीत का पुनर्निर्माण नहीं बल्कि वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों से भी प्रभावित होने वाली बौद्धिक प्रक्रिया है। इसलिए आधुनिक भारतीय इतिहास के अध्ययन में साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते समय किसी एक समुदाय को दोषी ठहराने के बजाय उन व्यापक संस्थागत, राजनीतिक, सामाजिक और बौद्धिक प्रक्रियाओं का अध्ययन आवश्यक है जिन्होंने ऐसी प्रवृत्तियों को जन्म दिया और उन्हें समय के साथ परिवर्तित किया। एक संतुलित इतिहास लेखन को धार्मिक पहचान के साथ-साथ वर्ग, जाति, क्षेत्र, भाषा, लिंग, आर्थिक संबंध, सांस्कृतिक संपर्क और स्थानीय अनुभवों को भी शामिल करना चाहिए। इस प्रकार इतिहास लेखन भारतीय समाज की विविधता और पारस्परिक संबंधों को अधिक वैज्ञानिक, आलोचनात्मक और समावेशी रूप में समझने का माध्यम बन सकता है।

संदर्भ

1. कलाकार, एम. ए. (2017)। क्रॉनिकल्स कंपास: सिंध एंड द क्रेश्चन ऑफ हिस्टोरियोग्राफी इन कॉलोनियल इंडिया-पार्ट I. क्रॉनिकल्स कंपास, 15(8), ई12403।
2. बटब्याल, आर. (2016)। इन सर्च ऑफ़ सेक मोनोक्रोम रेस्टॉरेंट: क्रॉउल रिस्टिंग इन इंडिया इन द फ़ोरस्ट डिकेड ऑफ़ द रिपब्लिक। स्टडीज़ इन पीपल्स स्टोरीलाइन, 3(2), 216-228।
3. अर्थशास्त्री, डी. (2011). द बर्थ ऑफ एकेडमिक हिस्टोरिक राइटिंग इन इंडिया। एस. मैकिनटायर, जे. मेगुस्का, और ए. पी. पोक (संपादक), द ऑक्सफ़ोर्ड क्रॉउल ऑफ़ हिस्टोरिक राइटिंग: टूर्नामेंट 4: 1800-1945 (पृष्ठ 520-536)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. गोटलोब, एम. (2011). कलावादी स्मृति और बहुवचनवादी पहचान। इन क्रॉनिकल्स एंड पॉलिटिक्स इन पोस्ट-कोलोनियल इंडिया (पृष्ठ 149-264)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. हिरडे, एन. (2014)। इंडियन ऑपरेशंस हिस्टोरियोग्राफी और ए न्यू प्रोच टुवर्ड्स क्रॉनिकल्स ऑफ इंडिया के इंस्पेक्टर्स। जर्नल ऑफ़ साउथ एशियन स्टडीज़, 20(1), 107-128।
6. जाफ़रे लोट, सी. (2024)। कम्यूनलिज्म. इन द ऑक्सफोर्डफोर्ड हैंडबुक ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स (पृष्ठ 405-426)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. कावर, वी. (2018)। औपनिवेशिक भारत का अनमोल गुला का इतिहास-लेखन। ऑक्सफोर्ड रिसर्च इनसाइक्लोपीडिया ऑफ कम्युनिकेशन। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. महाजन, एस. (2018)। बौद्ध मठवासी इतिहास और-लेखन: राष्ट्रों की कल्पनाएँ। रेविस्टा कनेरिया डी एस्टुडियोस इंग्लिशेस, 76, 211-221।
9. मुखर्जी, एस. (2011). 1947 के बाद का भारतीय इतिहास-लेखन। ए. श्राइडर और डी. एल्फ़ (संदर्भ), द वुऑक्सफ़ोर्ड क्रॉलिसिस ऑफ़ हिस्टॉरिकल राइटिंग: डुएल्फ़ 5: हिस्टॉरिकल राइटिंग सिंस 1945 (पृष्ठ 515-538)। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. पेंडेज़, जी. (2006)। उत्तर भारत में सांप्रदायिकता का निर्माण। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
11. फैरेल, एस. (2010)। एल्स्टर संप्रदायवाद और दक्षिण एशियाई इतिहास-लेखन से सीखें। क्रमांकन कंपास, 8(9), 1023-1035।